

मान्यवर,

सादर प्रणाम !

योग हमारे सनातन संस्कृति की आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जो शरीर-मन और आत्मा को एक दिव्य प्रवाह प्रदान करता है। यह हमारी ऋषि परम्परा से प्राप्त अमूल्य विद्या है, जिसकी लोकप्रियता न केवल प्राचीनकाल में थी, बल्कि वर्तमान में भी योग आत्मिक साधना एवं शान्ति के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है, जिससे इसके विकास एवं अभ्युदय का लक्ष्य सुदृढ़ हो चुका है। योग के विविध अङ्गों एवं सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने हेतु जयराम सन्देश पत्रिका का अग्रिम अङ्क “योग विशेषाङ्क” के रूप में प्रकाशित किया जाना है। इस सन्दर्भ में आप अपनी वैदुष्यपूर्ण, शास्त्रसम्मत, सरल बोधगम्य, सन्दर्भसहित प्रेरक रचनाएँ 30 अक्टूबर 2020 तक प्रकाशनार्थ प्रेषित करने की कृपा करें।

विशेष: - कृपया अपना शोधपत्र A Gautam अथवा Kruti Dev 10 में टाइप किया हुआ अथवा सुस्पष्ट अक्षरों में पृष्ठ के एक भाग में लिखा हुआ (न्यूनतम 1500 शब्दों में) ई-मेल अथवा डाक द्वारा प्रेषित करने का कष्ट करें।

साभार!

भवदीय

(डॉ० शिवशंकर मिश्र)

सम्पादक-जयराम संदेश
(ISSN-0975.8739)

1. योग की व्युत्पत्ति एवं अभिप्राय
2. अष्टांग योग
3. यौगिक क्रियाएँ
4. योग का महत्त्व
5. योग में प्रतिपाद्य
6. योग में वर्णित धार्मिक एवं दार्शनिक की भावना
7. योग का आध्यात्मिक प्रभाव
8. योग की वैज्ञानिकता
9. योग में आत्मतत्त्व
10. विश्वसाहित्य एवं पाश्चात्य मनीषियों का यौगिक चिन्तन
11. योग की वर्तमान प्रासंगिकता
12. योग में सदाचरण
13. योग में विश्वशान्ति
14. योग में लोकमंगलकामना
15. योगदर्शन में मोक्षसिद्धान्त